IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

शहडोल जिले के जयसिंहनगर विकासखण्ड में बैगा महिलाओं की आर्थिक स्वावलम्बन का अध्ययन

कविता शुक्ला[1] व डॉ. सुशीला द्विवेदी[2]
शोधार्थी, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, म.प्र.[1]
सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय रायपुरकर्चुलिया, रीवा, म.प्र.[2]

शोध सारांशः

बैगा जनजाति में भी आर्थिक सम्पन्नता की आकांक्षाएं लगभग नहीं के बराबर है। बाजार गया बैगा पैसे को जल्दी से जल्दी खर्च कर घर लौटना पसन्द करता है। सामाजिक उत्सव, धार्मिक मान्यतायें व क्रिया–कलाप, उत्सव, मेहमानों का स्वागत आदि पर भी बैगा अपनी आय का एक महत्वपूर्ण भाग व्यय कर देते है। बैगा किसी भी बन्धन में बधना पसन्द नहीं करते है भले ही वह सम्पत्ति का बन्धन क्यों न हो, यही कारण है कि वे जमीन के स्वामित्व का दायित्व आज भी नहीं निभा पाते। कालान्तर में समय के साथ–साथ परिवर्तन हो रहे है। शहडोल जिले की जयसिंहनगर की महिला बैगा जनजाति ने जमीन के स्वामित्व का दायित्व निभाना प्रारम्भ कर दिया है। आवश्यकतानुसार वे अब न्यायालय व पुलिस की सहायता की मांग करने लगे है। इस शोध पत्र में बैगा महिलाओं के आर्थिक स्वावलम्बन पर केन्द्रित शोध पत्र प्रस्तुत है।

मुख्य शब्दः शहडोल, जयसिंहनगर, विकासखण्ड, बैगा, महिलाओं, आर्थिक स्वावलम्बन, अध्ययन आदि।

प्रस्तावनाः

बैगा जनजातियों की अर्थव्यवस्था आज भी लघु वनोपज पर बहुत अधिक आश्रित है। डॉ0 शिवकुमार तिवारी के अनुसार बैगा जनजाति के आर्थिक विकास में सबसे महत्वपूर्ण बाधक है महाजनी। वे कहते है कि–''बैगा लोग झाड़–फूंक कर बीमारियों और सर्पदंश का इलाज न उनके स्वयं के मंत्रों में है और न ही हमारे आत्म केन्द्रित समाज के पास। आर्थिक स्थिति का सबसे अधिक प्रतिकूल पक्ष ऋणग्रस्तता है जो बैगा जनजाति के साथ–साथ मध्यप्रदेश की अन्य जनजातियों के विकास में भी बाधक है।

शहडोल जिले की जयसिनगर के विकासखण्ड 23.68 5417° अक्षांश उत्तरी 81.39 056° देशान्तर पूर्वी भाग में जयसिंहनगर भारत के मध्य प्रदेश राज्य के शहडोल जिले में एक कस्बा के रूप में विकसित हो रहा है और एक नगर पंचायत है। साथ ही लोग बघेली बोलते हैं। जयसिंहनगर तहसील की कुल जनसंख्या 161,717 है, जो कुल 196 गांवों और 88 पंचायतों में फैले 33,855 घरों में रहती है। पुरुष 82,093 और महिलाएं 79,624 हैं।

कुल 7,393 लोग कस्बे में रहते हैं और 154,324 ग्रामीण में रहते हैं। में बैगा महिला जनजाति का जीवन स्तर अत्यधिक निम्न स्थित में है। आम बैगा जनजाति परिवार अपनी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति पूर्णरूपेण नहीं कर पा रहा है। शिक्षा, समझ व सम्पर्क के परिणामस्वरूप कुछ जनजातीय परिवार आम बैगा परिवार की अपेक्षा विकासशील है किन्तु एक सामान्य स्थिति को प्राप्त नहीं कर पा रहे है। सामान्य रूप से समाज के अन्य समूह वर्गों के सापेक्ष बैगा महिला जनजाति की सामाजिक स्थिति अनुसूचित जाति व अन्य स्थानीय अनुसूचित जनजाति की तुलना में अधिक अच्छी है। बैगा जनजाति अपनी निर्भीकता, साख और परिश्रम के लिए विशेष सम्मानित है उन्हें समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। लोग कार्य पर रखने के लिये बैगा जनजाति को प्रथम वरीयता प्रदान करते है। बैगा स्वयं भी इसे प्रतिष्ठा समझते है वे कार्य भी मेहनत से करते है। बैगा जनजाति

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

के लोग परिश्रमी होते हैं और मेहनत कर अपना जीवन–यापन करते हैं। बेईमानी, इनके स्वभाव में नहीं है। ईश्वर में आस्था होने के कारण सच्चे और ईमानदार होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में बैगा जनजातियों से प्राप्त सांख्यिकी की संख्या 50 है इसलिए 50 बैगा जनजाति आधारित तथ्यों की व्याख्या अलग–अलग की जा रही है तथा संकलन के पश्चात् बैगा जनजाति से संबंधित तथ्यों की तालिका और उनका वर्गीकरण, विश्लेषण, मूल्यांकन आधारित है शेष 50 सर्वेक्षण बैगा जनजाति संबंधित अधिकारियों से किया गया है। प्राप्त तथ्यों के अनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये है।

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान शहडोल जिले के जयसिंहनगर विकासखण्ड में क्षेत्रीय सर्वेक्षण में जिन 50 बैगा महिला परिवारों का अध्ययन किया गया उनके परिवार की प्रकृति सम्बन्धी जो तथ्य प्राप्त हुए वे निम्नानुसार तालिका में उल्लेखित किये जा रहे है–

प्रस्तुत अध्ययन में 50 बैगा महिला परिवारों से सम्पर्क कर विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों पर चर्चा कर सर्वेक्षण में बिन्दु शामिल कि ये गये। सर्वेक्षण किसी शोध का महत्वपूर्ण पहलू है जिसके माध्यम से उन तथ्यों की गहराई तक पहुँचा जा सकता है जिनको हम अपने अध्ययन में उल्लेखित करना चाहते हैं इसलिए उक्त अध्याय में सर्वेक्षण प्रणाली को अपनाया गया है।

तालिका क्रमांक 1

बैगा जनजाति – समस्त स्त्रोतों से कुल मासिक आय

क्र.	आय की स्थिति	जनजाति संख्या	
		(अंको में)	(प्रतिशत में)
1	निम्न 1500/प्रतिमाह से कम	13	26
2	सामान्य से कम 1500 से अधिक 2500 या कम	12	24
3	सामान्य 2500 से अधिक 3500 प्रतिमाह तक	16	32
4	सामान्य से उच्च 3500 से अधिक 5500 तक	6	12
5	उच्च 5500 प्रतिमाह से अधिक	3	6
	योग	**50**	100

स्त्रोत–सर्वेक्षण द्वारा

तालिका से अवगत होता है कि बैगा महिला जनजाति की आर्थिक स्थिति आज भी उतनी अच्छी नहीं है जितने के अन्य जनजातियों की है। 50 बैगा महिला परिवारों की आज भी प्रतिमाह आय 1500 से कम है जिसका मासिक 26 प्रतिशत है। सामान्य से कम 1500 से अधिक 2500 या कम जिसका मासिक 24 प्रतिशत, सामान्य 2500 से अधिक 3500 प्रतिमाह तक परिवारों की आय मासिक 32 प्रतिशत, सामान्य 3500 से अधिक 5500 प्रतिमाह तक जिसका मासिक 12 प्रतिशत तक जबकि उच्च 5500 प्रतिमाह से अधिक परिवार जिनका 6 प्रतिशत मासिक आय से अधिक है।

इस प्रकार से कह सकते हैं कि बैगा महिला परिवारों में सर्वाधिक 26 प्रतिशत बैगा महिला परिवारों में प्रतिमाह आय 1500 रुपये से अधिक है। जो आज के जीवनशैली के अनुसार अत्यन्त अल्प है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

तालिका क्रमांक 2

बैगा जनजाति–रहन, सहन का स्तर

क्र.	रहन–सहन का स्तर	जनजाति संख्या	
		(अंको में)	(प्रतिशत में)
1	अत्यन्त निम्न	17	34
2	निम्न	22	44
3	सामान्य	9	18
4	सामान्य से उच्च	3	6
	योग	**50**	**100.00**

तालिका क्रमांक 2 एवं आरेख स्पष्ट होता है कि बैगाओं का रहन–सहन अत्यन्त निम्न है जिनका 34 प्रतिशत है। 44 प्रतिशत बैगा निम्न स्तर में जीवन यापन करते हैं। 18.00 प्रतिशत बैगा सामान्य जीवन जीते है। केवल 6 प्रतिशत बैगा उच्च स्तर का जीवन–यापन करते है। तालिका से स्पष्ट है कि बैगा आज भी पिछड़े हुये है।

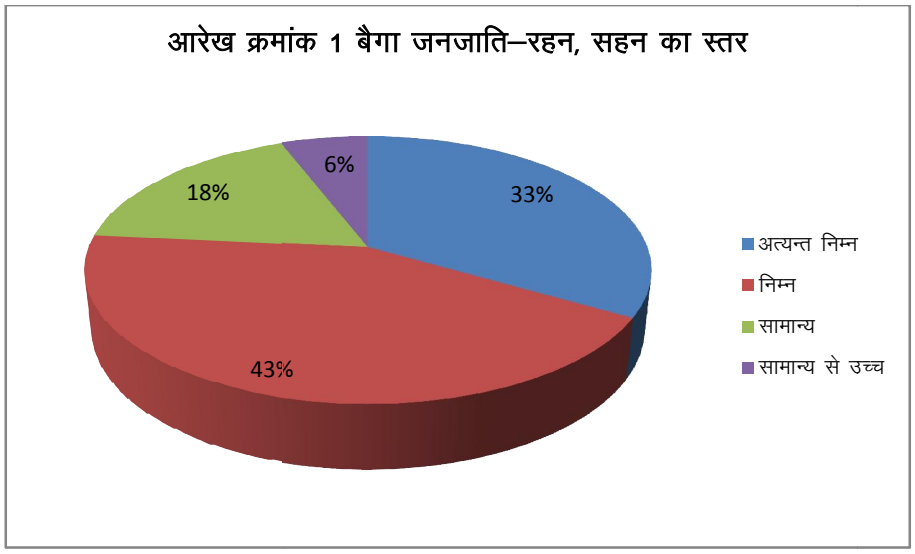

बैगा जनजाति के लोग अधिकांश व्यय भोजन पर ही करते है जो 65 प्रतिशत है। शेष राशि जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं जैसे कपड़े, नशा, नमक, मिर्च आदि पर व्यय करते है। बैगा फिजूल खर्च नहीं करते है। ये संतोषी जीव है और सीमित इच्छाँए रखते हैं।

बैगा जनजाति का व्यय निम्नानुसार है–

(1) भोजन में व्यय– 65 प्रतिशत

(2) कपड़ों में व्यय– 20 प्रतिशत

(3) मिट्टी का तेल पर व्यय– 02 प्रतिशत

(4) तम्बाकू बीड़ी पर व्यय– 03 प्रतिशत

(5) शराब पर व्यय– 05 प्रतिशत

(6) नमक, मिर्च मसाला पर व्यय आदि– 05 प्रतिशत

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

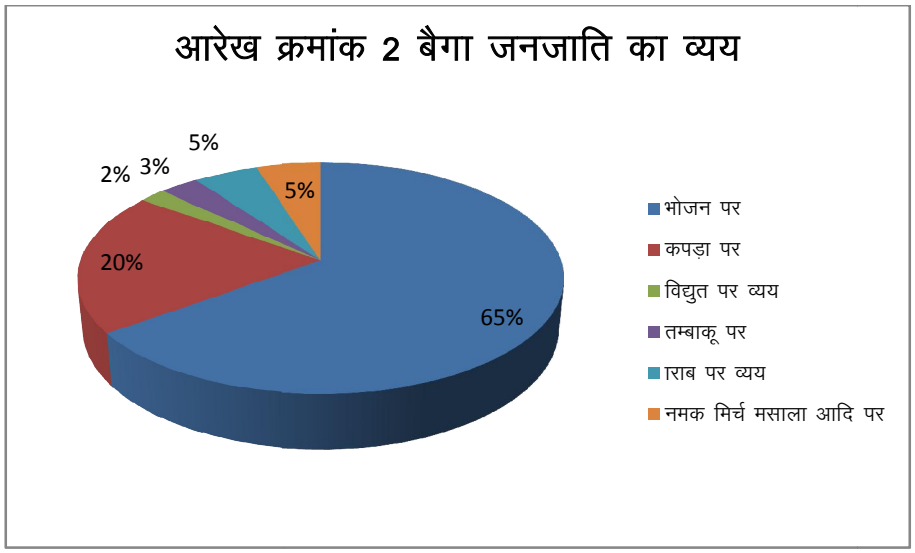

कहावत है कि बैगा का जीवन जन्म से मृत्यु तक ऋणग्रस्तता में गुजरता है। ऋणग्रस्तता बैगा जनजाति की मूल प्रवृत्ति बन गई है। अधिकांश बैगा कर्ज में डूबे रहते है और शोषण के शिकार होते है। भीरू प्रवृत्ति, संकोची स्वभाव, अशिक्षा, रोगों से घिरे रहना, जागरूकता की कमी और भोलापन इनके पिछड़ेपन का मुख्य कारण है। इन अंदरूनी भागों को जब से मुख्य सड़कों से जोड़ा है तब से शोषणकर्ता इन क्षेत्रों में प्रवेश कर गये है इन्हीं लोगों द्वारा छल–कपठ कर कर्ज देकर ऋणी बना दिये है।

तालिका क्रमांक 3

बैगा जनजाति – ऋणग्रस्तता

क्र.	ऋणग्रस्तता की प्रकृति	जनजाति की संख्या	
		(अंको में)	(प्रतिशत में)
1	निरन्तर ऋणग्रस्तता	4	7.33
2	अधिकांशतया ऋण	8	16.33
3	सामान्य ऋण	19	38.00
4	कभी–कभी ऋण	16	32.33
5	कभी नहीं	3	6.00
	योग–	**50**	**100.00**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

स्त्रोत–सर्वेक्षण द्वारा

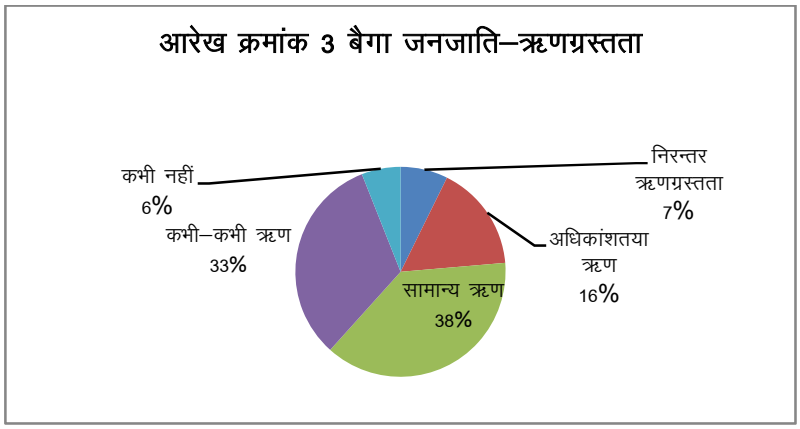

तालिका क्रमांक 3 एवं आरेख क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि 7 प्रतिशत बैगा परिवार निरंतर ऋण ग्रस्तता से पीढ़ित है। 38.00 प्रतिशत बैगा सामान्य ऋणग्रस्त है। 16 प्रतिशत कभी–कभी ऋण लेते है। केवल 6.00 प्रतिशत बैगा परिवार ऐसे है जो कभी ऋण नहीं लेते। अतः कहावत है कि बैगा का जन्म एवं मृत्यु साहूकारों की ऋणग्रस्तता में होती है।

बैगा जनजाति के लोग कठिन परिश्रम में विश्वास रखते है। मेहनत की खाना इनकी मुख्य विचारधारा है इसलिए ये लोग आलसी कम पाये जाते है। बैगा चाहे अपने खेत में काम करें या खदान में काम करें पूरी लगन और निष्ठा के साथ परिश्रम करते है। कहा जाता है कि बैगा कितना भी परिश्रम क्यों न करें लेकिन उसे उसकी मेहनत का फल नहीं मिल पाता है जिसके कारण उसे ऋणग्रस्तता में अपनी जिन्दगी जीना पड़ती है। ये लोग संतोषी होते है। यदि आज का भोजन है तो कल की परवाह नहीं करते।

तालिका क्रमांक 4

बैगा जनजाति – परिश्रम के प्रति दृष्टिकोण

क्र.	परिश्रम के प्रति दृष्टिकोण स्तर	जनजातियों की संख्या	
		(अंको में)	(प्रतिशत में)
1	अतिरिक्त कर्मठतावादी	15	30
2	अधिक कर्मठ	24	48
3	सामान्य परिश्रम	6	12
4	सामान्य से कम आलसी	2	4
5	अत्यन्त कम–अकर्मण्यतावादी	3	6
	योग	**50**	**100.00**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

स्त्रोत–सर्वेक्षण द्वारा

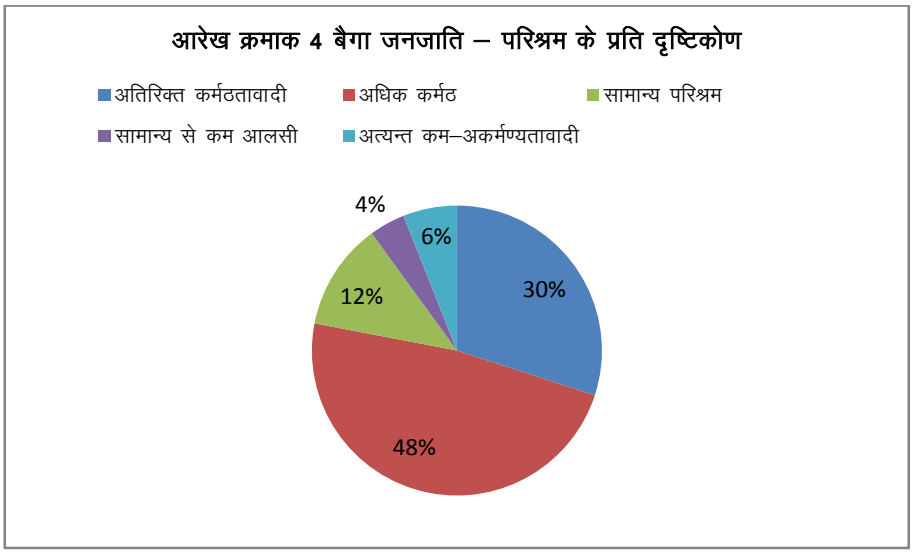

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 48.00 प्रतिशत बैगा जनजाति के लोग कठिन परिश्रम करके जीवन यापन करते है। 30 प्रतिशत बैगा अतिरिक्त कार्यठतावादी पाये गये है। अकर्मण्य बैगाओं का प्रतिशत मात्र 4.00 प्रतिशत है। इससे विदित है कि बैगा ईमानदारी से परिश्रम कर जीवन–यापन करने वाली जनजाति है।

अधिकांश बैगा पूँजी संचय में विश्वास नहीं करते। कम से कम पैसे में जिंदगी जीने की कला हम बैगाओं से सीख सकते हैं इनकी इच्छाएँ बहुत सीमित होती है तथा खर्च भी उसी अनुपात में करते हैं। धन इकट्ठा करके ये अपने जीवन को दुखी बनाने में विश्वास नहीं करतें। पैदा किया हुआ खाद्यान्न, वनोपज आदि आवश्यकता से अधिक होने पर तत्काल बेच देते हैं चाहे बाद में पुनः वहीं वस्तुएँ क्यों न क्रय करना पड़े जैसे महुआ एकत्रित कर महाजनों को सस्ते में बेच देते है और पुनः अपनी आवश्यकता के लिए अधिक कीमत पर खरीदते हैं।

तालिका क्रमांक 5

बैगा जनजाति–पूंजी संचय की प्रवृत्ति

क्रं.	पूंजी संचय की प्रवृत्ति	जनजाति की संख्या	
		अंकों में	प्रतिशत में
1.	अत्यधिक	1	2
2.	अधिक	2	4
3.	सामान्य	3	6
4.	कम	4	8
5.	न्यूनतम	6	12
6.	बिल्कुल नहीं	34	78
	योग	50	100

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

स्त्रोत – सर्वेक्षण द्वारा

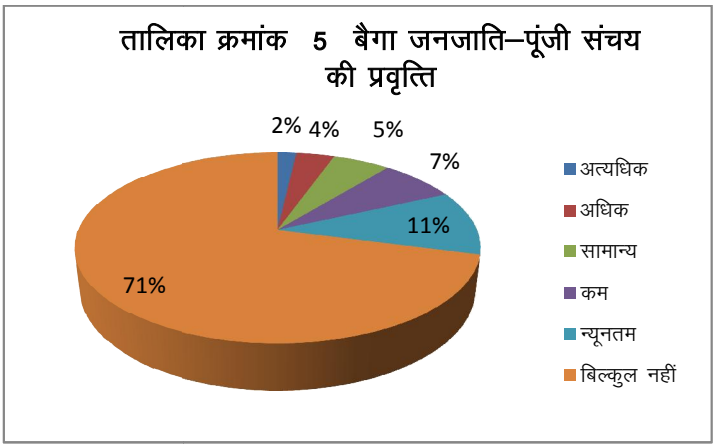

उपरोक्त तालिका एवं आरेख से स्पष्ट होता है कि बैगाओं द्वारा रूझान धन एकत्रित करने में नहीं के बराबर होता है। रोज कमाना रोज खाना इनकी प्रवृत्ति है। 70.67 प्रतिशत बैगा इसी प्रवृत्ति के हैं। 1.67 बैगा प्रतिशत बैगा अत्यधिक पूँजी एकत्रित करने में विश्वास करते हैं। 5.67 प्रतिशत बैगा पूंजी संचय में सामान्य प्रवृत्ति के पाये गये। इस जनजातियों में आज भी कोई भी पूँजीपति नहीं है।

बैगा जनजाति के लोगों का अन्य कार्यक्रमों मं व्यय नहीं के बराबर होता है क्योंकि ये सीमित इच्छाओं में अपनी जिंदगी जीते हैं। अन्य व्यय में इनकी अधिकांश पूँजी भोजन, वस्त्र, नशा एवं आभूषण आदि में खर्च होती है। वर्तमान में बैगाओं की इस प्रवृत्ति में कुछ परिवर्तन आ रहा है और ये मनोरंजन, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य शहरी क्रियाकलापों में व्यय करने लगे हैं, इसका मुख्य कारण बैगााओं का अन्य स्थलों पर जाकर प्रकार के व्यवसायों को अपनाना है।

तालिका क्रमांक 6

बैगा जनजाति–अन्य व्यय

क्रं.	व्यय के मद	संख्या	जनजाति द्वारा व्यय की औसत राशि प्रतिशत में
1.	स्वास्थ्य	1	2
2.	शिक्षा	2	4
3.	आभूषण आदि	6	12
4.	सामाजिक धार्मिक क्रियाओं पर व्यय	4	8
5.	अन्य व्यय	37	74
	महायोग	50	100

स्त्रोत–साक्षात्कार द्वारा

बैगाओं की आय का अधिकांश भाग आभूषणों पर 12 प्रतिशत भोजन, वस्त्र नशा आदि से व्यय होता है। 74 प्रतिशत बैगा इन्हीं में व्यय करते हैं। आभूषणों पर 12 प्रतिशत तथा धार्मिक क्रियाओं पर 8 प्रतिशत व्यय करते हैं, स्वास्थ्य पर 2 प्रतिशत, शिक्षा पर 4 प्रतिशत व्यय करते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

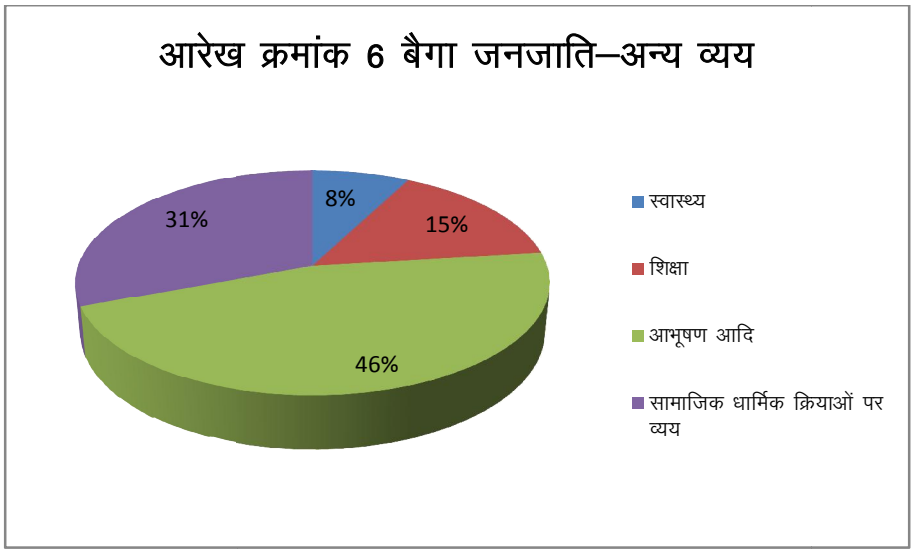

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति की महिलाएं एवं उनके परिवारों में शैक्षणिक स्तर तो न के बराबर ही है, बड़े ही ईमानदार होते हैं इनमें किसी भी प्रकार की चालाकी जैसे प्रवृत्ति इनमें नहीं होती पढ़ाई–लिखाई के प्रति ये दूर भागते हैं। ये मनमौजी प्रवृत्ति के होते हैं। अपने भोजन के लिए जंगलों में महुआ, मकई, तथा जंगली वनोंपज से ज्यादा लगाव होता है साथ हैं ये सर्वाधिक व्यय खाने पीने व शराब पर खर्च करते हैं। इस प्रकार से कह सकते हैं कि बैगा जनजाति परिवार की महिलाओं में अपने कार्य के प्रति सजग रहती हैं और अपने घरेलू एवं खेत खलिहान के कार्यों में अधिकतर संलग्नता पाई जाती है। जिससे आर्थिक आय में स्वयं को सहयोगी के रूप में स्वावलम्बी हुई हैं।

संदर्भ स्रोतः–

[1]. चौरसिया विजय, (2004) प्राकृति पुत्र बैगा। मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
[2]. तिवारी सी.पी. (2003) जनजातीय पर्यावरण आशा प्राकशन, आगरा।
[3]. सुरेश शर्मा, नागर एवं संजय कुमार (2003) भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, मेरठ।
[4]. पटेल जी.पी. (1991) बैगा जनजाति का मानव शास्त्रीय अध्ययन।
[5]. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2016 जिला शहडोल म.प्र.।
[6]. एल्विन बी. (1939) द बैगा जॉने मुरे लन्दन।
[7]. मध्य प्रदेश शासन, आदिमजाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान द्वारा प्रकाशित विशेश पिछड़ी जनजाति सर्वेक्षण प्रतिवेदन–बैगा।
[8]. ''मध्यप्रदेश प्रगति के नौ वर्ष'', स्मारिका संपादकः डी.पी. गोयल मार्च–2003
[9]. ''जनता की अदालत में मुकदमा'' भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश द्वारा प्रस्तुत, प्रकाशक : भारतीय जनता पार्टी, मध्यप्रदेश मुद्रकः असर रीप्रोग्राफिक्स भोपाल म0प्र0
[10]. 'प्रदेश के विकास का दृष्टि पत्र', द्विवेदी, शचीन्द्र, गौरव प्रतिष्ठान मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित।
[11]. लोक प्रशासन, भोपाल, म0प्र0, हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी त्रैमासिक पत्रिका।
[12]. दैनिक जागरण, रीवा, म0प्र0

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

[13]. नवभारत, जबलपुर रीवा, म0प्र0

[14]. दैनिक भास्कर, रीवा/सतना म0प्र0

[15]. स्टार समाचार रीवा

[16]. दैनिक पत्रिका समाचार पत्र रीवा/सतना